मधुबन-4

1. सफलता का मूल-मन्त्र

पाठ-बोध

1. (क) (i) परिश्रम को (ख) (iv) पर्वत पर चढ़ना पड़ता है।
(ग) (ii) उद्यम (घ) (iii) केवल मन के चाहने से
(ङ) (i) उद्यम के कारण (च) (ii) यदि वह उद्यम न करे।

2. **भाव**—जब आप दृढ़ आत्मविश्वास और कठिन परिश्रम से कोई कार्य करते हैं तो आपकी इच्छा पूर्ण हो जाती है।

3. (क) बिना **चले** कब कहाँ हुई है,
मंजिल पूरी यहाँ किसी की।
(ख) उद्यम किए बिना तो **चींटी**
भी अपना **घर** बना न पाती।

4. (क) सागर से मोती लाने के लिए सागर में गोता लगाना ही पड़ता है।
(ख) सफलता प्राप्त करने के लिए कठिन परिश्रम करना आवश्यक है, क्योंकि परिश्रम ही सफलता का मूल-मन्त्र है।
(ग) बिना चले मंजिल पूरी नहीं होती।

5. प्राप्त सफलता करने का है—
मूल-मन्त्र उद्योग-परिश्रम।।

भाषा-बोध

6. (क) स्त्रीलिंग (ख) पुल्लिग (ग) पुल्लिग (घ) स्त्रीलिंग
(ङ) स्त्रीलिंग (च) पुल्लिग (छ) पुल्लिग (ज) स्त्रीलिंग

7. चींटी ✓, उद्यम ✓, परिश्रम ✓, मंजिल ✓

8.

			स
			फ
मं	ि	ज	ल
			ता

	चीं
चो	टी

		प
		रि
		श्र
उ	द्य	म

9. (ख) सागर = **गागर** (ग) अपना = **सपना** (घ) मोती = **सोती**
(ङ) गोता = **सोता** (च) खाना = **दाना**

10. गाना = **गा** सोना = **सो** लिखना = **लिख**
हँसना = **हँस** खाना = **खा** पूछना = **पूछ**

ज्ञान-बोध

❖ छात्र स्वयं करें।

❑

2. मेरे बचपन की बातें

पाठ-बोध

1. (क) (iii) दीवान (ख) (iv) चित्रकला को (ग) (i) पुतलीबाई
(घ) (iii) : (i) व (ii) दोनों (ङ) (i) तेरह वर्ष।

2. शाम को चार बजे व्यायाम के लिए जाना था। 2
मेरे पास घड़ी न थी। 3
आकाश में बादल थे। 4
इससे समय का पता न चला। 5
जब पहुँचा तो सब जा चुके थे। 6
दूसरे दिन मुझसे कारण पूछा गया। 7
मैंने जो बात थी, बता दी। 8
उन्होंने उसे नहीं माना। 9
मैं झूठा नहीं हूँ, यह कैसे सिद्ध करूँ। 10

3. (क) ✓, (ख) ✗, (ग) ✓, (घ) ✓, (ङ) ✓, (च) ✗।

4. (क) गाँधी जी के पिता करमचन्द गाँधी थे। वे राजकोट के दीवान थे तथा सत्यप्रिय, साहसी और उदार व्यक्ति थे। गाँधी जी की माता पुतलीबाई थीं। वे धार्मिक विचारों वाली महिला थीं। पूजा-पाठ किए बिना वे भोजन नहीं करती थीं।

(ख) गाँधी जी का पूरा नाम मोहनदास करमचन्द गाँधी था।

(ग) श्रवण कुमार की पितृभक्ति देखकर गाँधी जी ने सोचा कि मैं भी 'श्रवण कुमार' की तरह बनूँगा।

(घ) 'सत्य हरिश्चन्द्र' नाटक से गाँधी जी के बाल-मन पर यह प्रभाव पड़ा कि चाहे हरिश्चन्द्र की भाँति दु:ख उठाना पड़े, पर सत्य को कभी नहीं छोड़ना चाहिए।

(ङ) व्यायाम के प्रति गाँधी जी की अरुचि के दो कारण थे—
(i) गाँधी जी का संकोची स्वभाव।
(ii) पिता की सेवा करने की तीव्र इच्छा।

5.

		क		
		स्तू		
		र		
पु	त	ली	बा	ई

6. (क) असह्य, (ख) संस्कृत, सख्त (ग) मन्दबुद्धि,
(घ) व्यायाम (ङ) असावधान।

7. 'अ' 'ब'

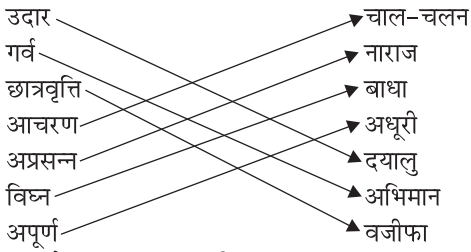

8.

राजकोट	**व्यक्तिवाचक**	न्याय	**भाववाचक**
शिक्षक	**जातिवाचक**	कस्तूरबा	**व्यक्तिवाचक**
स्वास्थ्य	**भाववाचक**	किताब	**जातिवाचक**

9. (क) पितृभक्त (ख) सत्यवादी (ग) धर्मात्मा (घ) संकोची (ङ) मन्दबुद्धि।

10. हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू, पंजाबी।

ज्ञान-बोध

❖ छात्र स्वयं करें। ❑

3. दो बैलों की कथा

पाठ-बोध

1. (क) (iii) बैल (ख) (i) किसान (ग) (ii) हीरा-मोती
(घ) (ii) नहीं (ङ) (ii) मोती ने।

2. (क) किसान (ख) हीरा, मोती (ग) गयाप्रसाद
(घ) काँजी हाउस (ङ) व्यापारी।

3. (क) ✗, (ख) ✓, (ग) ✗, (घ) ✓, (ङ) ✓।

4. (क) झूरी के पास दो बैल थे जिनके नाम हीरा व मोती थे।
(ख) पशु भी प्यार का भूखा होता है।
(ग) अत्याचार से तंग आकर हीरा और मोती ने रस्सियाँ तोड़कर भाग जाने का निश्चय किया।
(घ) काँजी हाउस में भैंसें, घोड़े, घोड़ियाँ, बकरियाँ, गधे व अन्य जानवर थे।
(ङ) अंत में हीरा-मोती झूरी किसान के घर पहुँचे।

5. 'अ' 'ब'

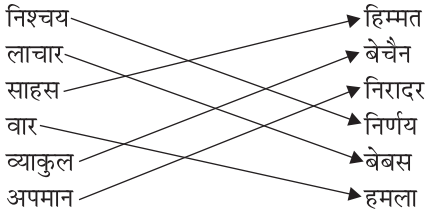

भाषा-बोध

6. (ख)

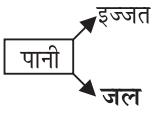

(ग)

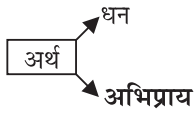

(घ)

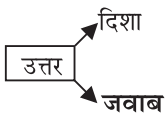

(ङ)

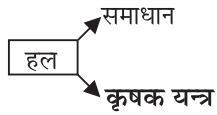

(च)

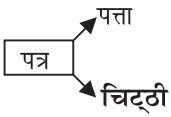

7.

प्यार	**घृणा**	बाँधना	**खोलना**
सजीव	**निर्जीव**	अपमान	**सम्मान**
स्वतंत्रता	**परतंत्रता**	खरीदना	**बेचना**
स्वामी	**दास**	कमजोर	**ताकतवर**
खुशी	**दु:खी**	साहस	**दुस्साहस**

8. (क) हीरा-मोती ✓ (ख) रूखा-सूखा ✓
(ग) सहते-सहते ✗ (घ) मारना-पीटना ✓
(ङ) जल-भुन ✓ (च) मोटे-मोटे ✗
(छ) दुबले-पतले ✓ (ज) खाते-खाते ✗

9. झूरी के पास हीरा-मोती नाम के दो बैल थे। झूरी **उन्हें** बहुत प्यार करता था। एक छोटी-सी लड़की भी **उन्हें** प्यार करती थी। जल्दी ही हीरा-मोती और **वह** लड़की तीनों दोस्त बन गए।

ज्ञान-बोध

❖ छात्र स्वयं करें।

❑

4. दिल्ली की यात्रा

पाठ-बोध

1. (क) (i) दिल्ली (ख) (ii) सिरी
(ग) (i) शीशगंज गुरुद्वारा (घ) (iii) लाल किला
(ङ) (i) लाल पत्थरों से (च) (ii) नई दिल्ली में।

2.

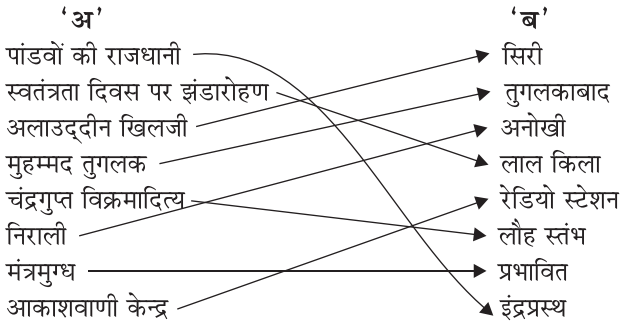

3. **विख्यात** = महाभारत काल में यह नगरी पांडवों की राजधानी 'इन्द्रप्रस्थ' के नाम से **विख्यात** थी।

वार्षिक = चार दिन पूर्व ही मेरी **वार्षिक** परीक्षा समाप्त हुई थी।

स्टेशन = मामा जी **स्टेशन** पर पहुँच गए थे।

निराली = दिल्ली अपने आपमें **निराली** नगरी है।

उचित = दिल्ली को 'देश का दिल' कहना **उचित** है।

4. (क) भारत की राजधानी महाभारत काल में पांडवों की राजधानी 'इन्द्रप्रस्थ' के नाम से विख्यात थी।

(ख) दिल्ली का प्रसिद्ध बाजार चाँदनी चौक है, जो पुरानी दिल्ली में स्थित है।

(ग) लाल किला लाल पत्थरों से बना हुआ है।

(घ) लौह-स्तम्भ चंद्रगुप्त द्वितीय 'विक्रमादित्य' ने बनवाया था।

(ङ) दिल्ली के सौन्दर्य को देखकर बालक ने महसूस किया कि वास्तव में यह बहुत निराली नगरी है, इसके सौन्दर्य ने उसे मन्त्रमुग्ध-सा कर दिया।

5. (क) बाजार (ख) नई (ग) पुरानी (घ) विहार (ङ) शीशगंज।

भाषा-बोध

6. (क) दिल्ली = द + इ + ल् + ल + ई

(ख) मामा = म् + आ + म् + आ

(ग) युग = य् + उ + ग् + अ

(घ) सैकड़ों = स् + ऐ + क् + अ + ड़् + ओं

7.

हवा	**वायु**	पानी	**जल**
प्रसिद्ध	**विख्यात**	कृषि	**खेती**
प्रात:	**सुबह**		

8.

समाप्त	**आरम्भ**	पानी	**हवा**
आवश्यक	**अनावश्यक**	आनंददायक	**कष्टदायक**
दिन	**रात**	उचित	**अनुचित**
धूप	**छाँव**	प्रभावित	**अप्रभावित**

9. (क) चार दिन पूर्व ही मेरी वार्षिक परीक्षा समाप्त **हुई थी**।
(ख) मामा जी ने मुझे **देख लिया**।
(ग) हम कार में बैठकर उनके साथ **चल दिए**।
(घ) मुझे न जाने कब नींद **आ गई**।
(ङ) कुतुबमीनार लोगों का मन मोह **लेती है**।

10.

(क) मेरे मामा जी दिल्ली में रहते हैं।	**वर्तमान काल**
(ख) मामा जी ने मुझे बताया।	**भूतकाल**
(ग) मैं यहाँ के प्रसिद्ध स्थानों को दिखाऊँगा।	**भविष्य काल**
(घ) मेरी परीक्षाएँ समाप्त हो गईं।	**भूतकाल**
(ङ) मेट्रो रेल का सफर बहुत ही रोमांचकारी था।	**भूतकाल**

ज्ञान-बोध

❖ छात्र स्वयं करें।

❑

5. भारत-भू की करें वन्दना

पाठ-बोध

1. (क) (iii) भारत-भूमि की (ख) (i) जाति-पाँति के
(ग) (ii) तुच्छ स्वार्थ की (घ) (iv) प्रेमपूर्वक
(ङ) (i) सबको प्यार देती है।

2. (क) मिल-जुलकर (ख) दूर करें
(ग) इसको अर्पण (घ) जाति-पाँति के
(ङ) लुटाती।

3. (क) मेरा सब कुछ इसको अर्पण,
सब कुछ इसकी थाती है।
(ख) तुच्छ स्वार्थ से ऊपर उठकर,
नव-नव मंगल कार्य करें।

4. (क) वर्ग-भेद (ख) भारत माता (ग) तुच्छ स्वार्थ से (घ) प्यार।

5. (क) छोटे-छोटे स्वार्थों से ऊपर उठकर नए-नए मंगल कार्य करके हम सबका मंगल कर सकते हैं।
(ख) इस कविता में भारत-माता की वन्दना की गई है।
(ग) अच्छे कार्य करके व मिल-जुलकर प्रेमपूर्वक रहकर हम सबका उत्थान कर सकते हैं।
(घ) कवि भारत माँ को अपना सब कुछ अर्पण करने को कहता है।
(ङ) जाति-पाँति के बन्धन तोड़कर हम वर्ग-भेद को मिटा सकते हैं।

6.

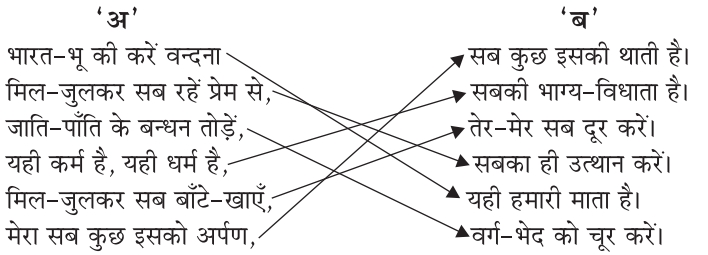

भाषा-बोध

7. मंगल = म् + अं + ग् + अ + ल् + अ
अर्पण = अ् + र् + प् + अ + ण् + अ
उत्थान = उ + त् + थ् + आ + न् + अ
भाग्य = भ् + आ + ग् + य् + अ।

8. भाग्य-विधाता = **भाग्य का विधाता** वर्ग-भेद = **वर्गों का भेद**

9. (क) पृथ्वी = **भूमि, धरा, वसुधा** (ख) आकाश = **गगन, अम्बर, नभ**
(ग) फूल = **पुष्प, सुमन, कुसुम** (घ) वायु = **समीर, हवा, पवन।**

10. अवनति = **उन्नति** अपना = **पराया**
शुभ = **अशुभ** प्यार = **घृणा**
मंगल = **अमंगल** सुख = **दुःख**
गरीब = **अमीर** धर्म = **अधर्म**
आधार = **निराधार** ऊपर = **नीचे**

ज्ञान-बोध

❖ छात्र स्वयं करें।

❑

6. गंगा की आत्मकथा

पाठ-बोध

1. (क) (i) गंगोत्री (ख) (i) पिता पर्वतराज हिमालय ने
(ग) (iii) भागीरथ (घ) (ii) बाढ़
(ङ) (i) कल्याण

2. (क) कर्त्तव्य (ख) विघ्न-बाधाओं (ग) सागर
(घ) पर्वतों के राजा (ङ) भावुक।

3. (क) एक दिन नदी के पिता ने नदी से कहा कि तुम्हारा जन्म यहाँ रहने के लिए नहीं हुआ है। तुम्हें अपने शीतल जल से लाखों-करोड़ों लोगों की प्यास बुझानी है। लोगों पर उपकार करना है, अपने कर्त्तव्य-पथ पर चलते हुए तुम्हें कभी रुकना नहीं है।

(ख) गंगा ने मनुष्य पर अनेक उपकार किए हैं, उसे जीवन प्रदान किया है परन्तु मनुष्य आज इतना कृतघ्न हो गया है कि वह बेदर्दी से गंगा में अपना कूड़ा-कचरा फेंक रहा है, गंगा में गंदे नाले मिल रहे हैं, मनुष्य जरा भी नहीं सोच रहा है कि इस गंदगी से गंगा की स्वच्छता, सुंदरता और निर्मलता नष्ट हो जाएगी।

(ग) हम नदी को सरिता, तरंगिणी, नद, तटिनी आदि नामों से पुकारते हैं।

(घ) नदी को इस बात का संतोष रहता है कि उसने निरंतर गतिशील रहकर अपने कर्त्तव्य का पालन किया तथा मानव मात्र को पुत्रवत् स्नेह दिया।

4.

'अ'	'ब'
निनाद	आवाज
अवरोध	रुकावट
पुत्रवत्	पुत्र के समान
विह्वल	व्याकुल
संकल्प	प्रतिज्ञा
गतिशील	कार्यरत
भावुक	संवेदनशील
सरिता	नदी
कल्याण	मंगल

भाषा-बोध

5. लाखों-करोड़ों = लाखों और करोड़ों। कूड़ा-कचरा = कूड़ा और कचरा।

6. रुपया रूप
रुदन रूस

7. ज्ञान = ज् + ञ् + आ + न् + अ
ज्ञाता = ज् + ञ् + आ + त् + आ
ज्ञात = ज् + ञ् + आ + त् + अ
ज्ञापन = ज् + ञ् + आ + प् + अ + न् + अ
प्रज्ञा = प् + र् + अ + ज् + ञ् + आ।

8. अंक = **नंबर, गोद** कर = **हाथ, किरण** अर्थ = **कारण, धन**।

9.

सरिता	तरंगिणी, तटिनी, नदी
पर्वत	गिरि, शैल, पहाड़
संसार	विश्व, दुनिया, जग
जल	पानी, नीर, तोय
कन्या	किशोरी, कुमारी, बालिका

10. कृतज्ञ = **कृतघ्न** जन्म = **मृत्यु**
तीव्र = **मन्द** मिलना = **बिछुड़ना**
गतिशील = **गतिहीन** उपकार = **अपकार**
विश्वास = **अविश्वास** अशुद्ध = **शुद्ध**
राजा = **रंक** सुंदर = **कुरूप**

ज्ञान-बोध

❖ छात्र स्वयं करें।

❑

7. हेलेन केलर

पाठ-बोध

1. (क) (iv) अमेरिका (ख) (iv) 27 जून, 1880
(ग) (i) वे हेलेन को लाचार एवं असहाय समझकर व्यर्थ दया न दिखाएँ।
(घ) (iii) शारीरिक अपंगता (ङ) (ii) लुई ब्रेल

2. यदि हम एक कार्य में असफल हो जाते हैं तो ईश्वर दूसरा द्वार खोल देता है, लेकिन हम फिर भी वर्तमान को भूलकर भूतकाल में किए गए असफल कार्यों पर ध्यान रखते हैं। जबकि हमें मौजूदा अवसरों में अपने आपको सफल करने का प्रयास करना चाहिए।

3. (क) ज्वर, (ख) विश्वास, (ग) सुलभ, (घ) ललक, (ङ) बाधक।

4. (क) हेलेन केलर कैप्टन केलर की पुत्री थी। तेज ज्वर से पीड़ित होने के कारण उनकी देखने, बोलने और सुनने की शक्ति समाप्त हो गई थी।
(ख) एनी सुलिवान एक कुशल अध्यापिका थी। उसे हेलेन केलर को पढ़ाने के लिए भेजा गया।
(ग) एनी सुलिवान के अथक परिश्रम से हेलेन नम्र, हँसमुख और सहज बन गई। उसमें सीखने की ललक और काम करने की लगन पैदा होती चली गई।
(घ) हेलेन केलर के जीवन से हमें यह प्रेरणा मिलती है कि उन्नति तथा विकास में शारीरिक अपंगता बाधक नहीं हो सकती, अकर्मण्यता और निराशा उन्नति के मार्ग में बाधक हैं।
(ङ) दृष्टिहीन व्यक्ति ब्रेल लिपि पढ़ लिख सकते हैं।

5.

'अ'	'ब'
विलक्षण	विचित्र
अपंग	योग्यता
मूक	मौन
कृति	रचना
समृद्धि	संपन्नता
क्षमता	न थकने वाला
उपलब्धि	प्राप्ति
अथक	विकलांग
अकर्मण्यता	निकम्मापन

भाषा-बोध

6. (क) मूक (ख) बधिर (ग) दृष्टिहीन (घ) ब्रेल (ङ) अकर्मण्य (च) अपंग।

7. (क) बहुवचन (ख) विशेषण (ग) विलोम (घ) व्यक्तिवाचक (ङ) व्यंजन।

8. निराशा = **आशा** | असहिष्णुता = **सहिष्णुता**
बन्द = **खुला** | नम्र = **अनम्र**
कुशल = **अकुशल** | सम्भव = **असम्भव**
हार = **जीत** | अन्धकार = **प्रकाश**

ज्ञान-बोध

❖ छात्र स्वयं करें। ❑

8. अनमोल मित्र

पाठ-बोध

1. (क) (iv) ये सभी (ख) (ii) इंग्लैण्ड (ग) (i) निकोलस से
(घ) (i) परिश्रमी (ङ) (i) न्यायाधीश।

2. (क) दर्पण (ख) दर्पण (ग) मार पड़ने
(घ) स्वभाव (ङ) न्यायाधीश।

3. (क) बेक परिश्रमी, सीधा और सच्चा लड़का था।
(ख) दोनों मित्र इंग्लैण्ड के वेस्टमिनिस्टर नाम के प्रसिद्ध स्कूल में पढ़ते थे।
(ग) शिक्षक ने बेक की पिटाई इसलिए की, क्योंकि वह खड़ा होकर बोला कि दर्पण मेरे हाथ से टूट गया है।
(घ) उछल-कूद करते समय निकोलस दर्पण से टकरा गया जिससे दर्पण चूर-चूर हो गया।
(ङ) इस घटना से प्रेरणा लेकर निकोलस कठिन परिश्रम करने लगा तथा सच्चाई के पथ पर चला और वह न्यायाधीश के पद पर पहुँच गया।

भाषा-बोध

4.

द	**र्प**	ण	

ऊ	ध	म	

पा	**ठ**	**शा**	ला

अ	**ध्या**	प	क

न्या	**या**	**धी**	श

स	ड़ा	स	**ड़**

5. (क) आलसी, झूठा (ख) परिश्रमी, सच्चा (ग) प्रसिद्ध (घ) कठोर (ङ) नीले।

6.

'अ'	'ब'	
कठोर	लड़के	**कठोर स्वभाव**
सब	मित्रता	**सब लड़के**
बड़ी	बालक	**बड़ी भूल**
सच्चा	स्वभाव	**सच्चा बालक**
गहरी	भूल	**गहरी मित्रता**

7. सहज = **कठिन** | कठोर = **मुलायम** | प्रारम्भ = **समाप्त**
गहरा = **छिछला** | सच्चा = **झूठा** | बड़ा = **छोटा**

8. मित्र = **मीत, सखा** दर्पण = **शीशा, आईना**
ऊधम = **उपद्रव, शरारत** परिश्रम = **मेहनत, उद्यम**

ज्ञान-बोध

❖ छात्र स्वयं करें।

❑

9. नीति-वचन

पाठ-बोध

1. (क) (ii) अभी (ख) (iv) सुख की (ग) (iii) चन्दन के
(घ) (i) एक आदर्श व्यक्ति (ङ) (ii) मीठे वचन।

2. (क) मन (ख) सुख (ग) वचन (घ) सूई।

3. (क) काल्ह करै सौ आज कर, आज करै सो अब।
(ख) तुलसी मीठे वचन ते, जग अपनो कर लेत।
(ग) रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजै डारि।
(घ) जो सुख में सुमिरन करैं, दु:ख काहे को होय।

4. (क) कबीरदास जी के अनुसार खजूर के पेड़ के रूप में बड़ा होना बेकार है जिससे न तो यात्री को छाया मिलती है और फल भी बहुत ऊँचाई पर लगते हैं।
(ख) हमें दूसरों को मोह लेने वाली मीठी वाणी का प्रयोग करना चाहिए, जिससे हम दूसरों को अपना बना सकें।
(ग) तुलसीदास जी ने वशीकरण मन्त्र में कहा है कि मनुष्य को कठोर वचनों का परित्याग कर मधुर व मीठे वचनों का प्रयोग करना चाहिए।
(घ) बड़ों को देखकर छोटों को नहीं त्यागना चाहिए, क्योंकि समाज में प्रत्येक व्यक्ति का स्थान सुनिश्चित है तथा जहाँ छोटों का काम होता है वहाँ बड़े कुछ नहीं कर सकते।
(ङ) जो पुरुष परोपकार में लगे रहते हैं, उन्हें दूसरों की मदद करने में ही आनन्द मिलता है।

भाषा-बोध

5. (क) बानी = **वाणी** (ख) सीतल = **शीतल**
(ग) परलै = **प्रलय** (घ) सुमिरन = **स्मरण**
(ङ) काग = **काक** (च) व्यापत = **व्याप्त**

6. (क) दु:ख = **पीड़ा, दर्द, वेदना।** (ख) पंथी = **पथिक, राही, राहगीर।**
(ग) भुजंग = **विषधर, साँप, फणी।** (घ) पेड़ = **वृक्ष, पादप, विटप।**
(ङ) विष = **गरल, जहर, हलाहल।**

7. खोय = **होय** खजूर = **दूर** ओर = **कठोर**
भुजंग = **कुसंग** डारि = **तलवारि** रंग = **संग**

ज्ञान-बोध

❖ साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
जाके हिरदै साँच है, ताके हिरदै आप।।
गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागौं पाँय।
बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दियो बताय।।

10. व्यायाम का महत्त्व

पाठ-बोध

1. (क) (iv) इन सभी के (ख) (i) स्वस्थ मन तथा आत्मा का
(ग) (iv) ये सभी (घ) (iv) मानसिक श्रम
(ङ) (i) नाक से साँस लेना चाहिए। (च) (ii) संस्थागत और व्यक्तिगत।

2. (क) ✗, (ख) ✗, (ग) ✗, (घ) ✓, (ङ) ✓।

3. (क) **महामारी** = आज संसार में **महामारी** बढ़ती जा रही है।
(ख) **बौद्धिक कार्य** = बीमार व्यक्ति न तो शारीरिक श्रम कर सकता है और न **बौद्धिक कार्य**।
(ग) **पौष्टिक पदार्थ** = व्यायाम करने के थोड़ी देर बाद **पौष्टिक पदार्थ** लेने चाहिए।
(घ) **ऑक्सीजन** = अधिक **ऑक्सीजन** जाने से प्राण-शक्ति बढ़ती है और शरीर पुष्ट होता है।
(ङ) **जिम** = आजकल बड़े-बड़े नगरों में **जिम** खुल गए हैं।

4. (क) जो व्यक्ति अपने शरीर की लगातार उपेक्षा करता है, वह अपने लिए रोग, बुढ़ापा और मृत्यु के द्वार स्वयं ही खोलता है। स्वास्थ्य का प्रमुख नियम यह है कि प्रत्येक मनुष्य को व्यायाम के लिए थोड़ा-सा समय अवश्य निकालना चाहिए।
(ख) व्यायाम का शाब्दिक अर्थ कसरत है, इसके अन्तर्गत अनेक प्रकार के क्रियाकलाप शामिल होते हैं, जैसे—सवेरे जल्दी उठकर घूमने जाना, योग करना। हमें स्वस्थ रहने के लिए तरह-तरह के व्यायाम करने चाहिए।
(ग) व्यायाम करने से शरीर में तेजी से रक्त-संचार होता है। अधिक ऑक्सीजन जाने से प्राण-शक्ति बढ़ती है और शरीर पुष्ट होता है। अत: लोग अपने शरीर को स्वस्थ रखने के लिए व्यायाम करते हैं।
(घ) यदि हमारा शरीर स्वस्थ रहेगा तो मन भी प्रसन्न रहेगा और हम प्रत्येक कार्य को आनन्द और स्फूर्ति से सम्पन्न कर सकेंगे।
(ङ) व्यायाम करते समय हमें निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए—
(i) उपयुक्त व्यायाम का चुनाव।
(ii) व्यायाम के लिए उपयुक्त समय।
(iii) व्यायाम की उचित मात्रा।
(iv) व्यायाम करते समय यदि थकान का अनुभव हो तो तुरन्त व्यायाम बन्द कर देना चाहिए।
(v) व्यायाम करते समय नाक से साँस लेना चाहिए।

5.

'अ'	'ब'
सरलता	सुगमता
उपयुक्त	उपयोगी
व्यक्तिगत	निजी
स्फूर्ति	तेजी
अन्तर्गत	अन्दर
उपेक्षा	अनदेखा
नियमित	नियमपूर्वक

भाषा-बोध

6. स्फूर्ति = **तेजी, फुर्ती** सुगमता = **सरलता, आसानी**
शरीर = **देह, काया** कार्य = **काम, कर्म**।

7. आलस = **स्फूर्ति** रोगी = **निरोगी** बुढ़ापा = **बचपन**
स्वस्थ = **अस्वस्थ** भलाई = **बुराई** मृत्यु = **जन्म**।

8. बुढ़ापा = **वृद्धावस्था** साँस = **श्वास** फुर्ती = **स्फूर्ति**
दूध = **दुग्ध** नाक = **नक्र** आलस = **आलस्य**।

9. (i) बीमार = बीमारियाँ (ii) बच्चे = बच्चियाँ (iii) विशेष = विशेषता
(iv) प्रसन्न = प्रसन्नता (v) मनुष्य = मनुष्यता (vi) आवश्यक = आवश्यकता

ज्ञान-बोध

❖ छात्र स्वयं करें।

❑

11. परिवर्तन

पाठ-बोध

1. (क) (i) तेज (ख) (ii) लुटेरा (ग) (i) शान्तिपूर्ण
(घ) (iii) हर दिन शाम को सबके सामने अपनी गलती को स्वीकारना होगा।
(ङ) (iv) उपरोक्त सभी।

2. (क) सरल, सादगी (ख) लुटेरा (ग) लूटपाट (घ) गुनाह
(ङ) सचमुच, छोड़ (च) सुखमय, आधार।

3. (क) महात्मा ने, लुटेरे से। (ख) लुटेरे ने, महात्मा से।
(ग) लुटेरे ने, महात्मा से। (घ) महात्मा ने, लुटेरे से।
(ङ) शिष्य ने, महात्मा से।

4. (क) महात्मा के पास एक मैला-कुचैला, बढ़ी हुई दाढ़ी, लाल-लाल आँखों वाला आदमी दौड़ता हुआ आया। देखने से वह लुटेरा लग रहा था और वह लुटेरा ही था।

(ख) उसने महात्मा के पैरों में माथा टिकाकर कहा—महाराज! मैंने बहुत अपराध किए हैं, कई लोगों को लूटा है और हत्याएँ भी की हैं। अब मैं शान्तिपूर्ण जीवन जीना चाहता हूँ।

(ग) महात्मा का जीवन बहुत ही सरल और सादगी से परिपूर्ण था।

(घ) महात्मा ने दूसरी शर्त रखी कि प्रत्येक दिन शाम को तुम्हें मेरे पास आकर सबके सामने अपनी गलती को स्वीकारना होगा।

(ङ) इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें अपनी गलतियों को स्वीकार कर उन्हें सुधारने की प्रतिज्ञा करनी चाहिए। इससे हमारे जीवन में एक स्वर्णिम सवेरा बनकर आएगा, जो हमारे जीवन में नवनिर्माण का कार्य करेगा।

भाषा-बोध

5. (क) वाचाल (ख) लुटेरा (ग) दयालु (घ) हत्यारा।

6. (क) एक बार की बात है।
(ख) तुम्हारे अंदर ये अवगुण कहाँ से आए?
(ग) महाराज! मैं अपने जीवन में बदलाव लाना चाहता हूँ।
(घ) मैला-कुचैला, बढ़ी हुई दाढ़ी, लाल-लाल आँखें। देखने से ही कोई लुटेरा जान पड़ता था।

7. संज्ञा = (क) महात्मा (ख) महाराज (ग) महात्मा
(घ) शिष्य, महाराज (ङ) महात्मा।
सर्वनाम = (क) उसकी (ख) मैंने (ग) तुम
(घ) वह (ङ) तुम।

ज्ञान-बोध

❖ छात्र स्वयं करें।

❑

12. ग्रामीण जीवन-शैली

पाठ-बोध

1. (क) (i) महात्मा गाँधी (ख) (ii) खेती
(ग) (iii) गाँवों में (घ) (i) गाँव में
(ङ) (ii) सुविधाओं का (च) (iv) डॉक्टर।

2. (क) दादा-दादी के पास (ख) गाँवों में (ग) शोषण (घ) अभाव।

3. (क) करण अपने मित्र के पत्र का उत्तर शीघ्रता से इसलिए न दे सका, क्योंकि इस बार वह गरमी की छुट्टियों में अपने दादा और दादी के पास गाँव चला गया था।

(ख) गाँव के लोगों में 'सादा जीवन और उच्च विचार' की झलक मिलती है, ये लोग हृदय से सीधे, सच्चे और पवित्र होते हैं। ये लोग छल-कपट से दूर रहते हैं। गाँव वासी बहुत ईमानदार और अतिथि सत्कार वाले होते हैं।

(ग) करण गाँव में सुबह जल्दी उठ जाता था। दैनिक क्रिया से निवृत्त होकर दूध पीता और चाचा जी के साथ खेतों की ओर निकल पड़ता था।

(घ) नए रोजगार की तलाश में ग्रामीणजन शहरों की ओर भाग रहे हैं।

4.

'अ'	**'ब'**
हरीतिमा	हरियाली
शोषण	अत्याचार
अतिथि	मेहमान
शोरगुल	कोलाहल
व्यय	खर्च
व्यर्थ	बेकार

भाषा-बोध

5. **कि** = (i) हमें इस बात का ध्यान रखना चाहिए **कि** खाना खाने के बाद व्यायाम न करें।

(ii) हेलेन की उपलब्धियों ने यह सिद्ध कर दिया **कि** उन्नति तथा विकास में शारीरिक अपंगता बाधक नहीं हो सकती।

की = (i) गाँव **की** ऐसी दशा देखकर मेरा मन द्रवित हो उठा।

(ii) रोजगार तलाशने लोग शहर **की** ओर जा रहे हैं।

6.

विशेषण	**भाववाचक संज्ञा**
ईमानदार	छल
सादा	स्नेह
सच्चा	अनुभव
पवित्र	कपट
रूखा-सूखा	मेहनत
सुहावना	खुशी
मोटा	प्यार
अच्छा	
आत्मसंतोषी	

7. मेहनत = **मेहनती** छल = **छलिया** कपट = **कपटी**
अनुभव = **अनुभवी** आत्मसंतोष = **आत्मसंतोषी**।

8. गाँव में ही मैंने प्रकृति का शुद्ध रूप देखा। सचमुच जो आनन्द मुझे यहाँ के बाग-बगीचे में, कच्चे लिपे-पुते घरों में प्राप्त हुआ, वह शहर में कभी नहीं प्राप्त हुआ।

9. शोषण = **दमन, उत्पीड़न** आनन्द = **हर्ष, उल्लास** कपट = **छल, धोखा**
शुभ = **शिव, मंगल** ज्ञान = **विद्या, समझ**।

10. सत्य = **असत्य** ज्ञान = **अज्ञान** संतोष = **असंतोष**
शुभ = **अशुभ** पवित्र = **अपवित्र** समय = **असमय**।

ज्ञान-बोध

❖ छात्र स्वयं करें। ❑

13. वीर, तुम बढ़े चलो

पाठ-बोध

1. (क) (ii) देश के सम्मान के लिए (ख) (ii) देश के बच्चों को
(ग) (ii) राष्ट्रध्वज।

2. प्रात हो **कि रात हो,**
संग हो न साथ हो।
सूर्य से बढ़े चलो,
चंद्र से बढ़े चलो।
वीर, **तुम बढ़े चलो,**
धीर, तुम बढ़े चलो।

3. (क) **सामने** = राम के **सामने** अनेक कठिनाइयाँ थीं।
(ख) **निडर** = लक्ष्मण **निडर** होकर डटा रहा।
(ग) **वीर** = किसी से डरो मत, **वीर** की तरह बढ़े चलो।
(घ) **ध्वज** = हमारा **ध्वज** झुकना नहीं चाहिए।

4. (क) कवि वीरों से देश के सम्मान के लिए आगे बढ़ने को कह रहा है।
(ख) ध्वज इसलिए नहीं झुकना चाहिए, क्योंकि वीरों को हार नहीं माननी है, उन्हें निरन्तर आगे बढ़ते रहना है।
(ग) वीरों को सूर्य और चन्द्र की तरह आगे बढ़ने को कहा गया है। जिस तरह सूर्य और चन्द्र कभी नहीं रुकते उसी तरह वीरों को भी हमेशा आगे बढ़ते रहना है।
(घ) इस कविता से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें किसी भी कठिनाई को देखकर हार नहीं माननी चाहिए। किसी भी परेशानी से डरना नहीं चाहिए। निडर होकर उनका सामना करना चाहिए और हमेशा आगे बढ़ना चाहिए।

भाषा-बोध

5. सिंह = **शेर, महावीर** मेघ = **बादल, नीरद** प्रात: = **सुबह, सवेरा**
सूर्य = **सूरज, रवि** चन्द्र = **चाँद, रजनीश**

6. (क) वीर **धीर** (ख) नहीं **वहीं** (ग) ध्वजा **सजा**
(घ) गरजते **बरसते** (ङ) झुके **रुके** (च) कड़क **तड़क**
(छ) पहाड़ **दहाड़** (ज) प्रात **रात**

ज्ञान-बोध

❖ छात्र स्वयं करें।

❑

14. कार्य की महत्ता

पाठ-बोध

1. (क) (ii) तक्षशिला (ख) (i) जीवक (ग) (iii) अपनी दासी की
(घ) (ii) 'पंथक' को (ङ) (iii) काम से।

2. (क) महिमा (ख) व्यवहार (ग) प्रसन्न
(घ) धनवती (ङ) परदा।

3. (क) सेठ ने, पापक से। (ख) आचार्य ने, पापक से।
(ग) पंथक ने, पापक से। (घ) पापक ने, आचार्य से।

4. (क) आचार्य के पास जाकर पापक ने कहा कि "आचार्य, मेरा मन पढ़ने में नहीं लगता है। मैं हमेशा यही सोचता रहता हूँ कि इस नाम से किस तरह छुटकारा मिले और अपने सहपाठियों के उपहास से बचूँ। आपसे प्रार्थना है कि मेरा नाम बदलकर कोई और दूसरा नाम रख दें।"

(ख) पापक का मन पढ़ाई में इसलिए नहीं लगता था, क्योंकि उसे अपने नाम की चिंता सताए रहती थी।

(ग) आचार्य ने पापक को उत्तर दिया कि तुम सर्वत्र घूम आओ, लोगों से मिलो और तुम्हें जो भी अच्छा नाम सूझे, मुझे आकर बता देना। मैं तुम्हारा वही नाम रख दूँगा।

(घ) पापक घूमते समय रास्ते में जीवक, धनवती और पंथक से मिला।

(ङ) पापक ने एक नया ज्ञान प्राप्त किया कि नाम से महिमा नहीं बढ़ती, काम से बढ़ती है। नाम तो केवल व्यवहार के लिए है।

भाषा-बोध

5. (क) **नाम** से **महिमा** नहीं बढ़ती, **काम** से बढ़ती है।
(ख) **तक्षशिला** एक विशाल **विश्वविद्यालय** था।
(ग) एक **विद्यार्थी** था, उसका नाम था—**पापक।**
(घ) उसका **मन** पढ़ने में नहीं लगता था।
(ङ) वह अपने **सहपाठियों** के **उपहास** से बचना चाहता था।

6. छात्र स्वयं पढ़ें।

7.

शब्द	**विलोम शब्द**	**शब्द**	**विलोम शब्द**
स्पष्ट	**अस्पष्ट**	शुभ	**अशुभ**
हित	**अहित**	पवित्र	**अपवित्र**
ज्ञान	**अज्ञान**		

8. (क) **आँख चुराना** = किसी का सामना करने से हिचकना।
(ख) **आँख गड़ाना** = एकटक देखते जाना।
(ग) **आँख दिखाना** = गुस्से से देखना या क्रोध भरी नजरों से देखना।
(घ) **आँख में खटकना** = देखने में अत्यन्त कष्टकर प्रतीत होना।

ज्ञान-बोध

❖ छात्र स्वयं करें।

❑

15. गुरु द्रोण की सीख

पाठ-बोध

1. (क) (iv) ये सभी
(ख) (i) उसे क्रोध न करने का अभ्यास नहीं हो पाया था।
(ग) (iii) आश्चर्य में पड़ गए पर चुप रहे।
(घ) (iii) युधिष्ठिर पाठ के आचरण को ही पाठ स्मरण करना मानते थे।

2. (क) गुरु जी ने, सुयोधन से। (ख) सुयोधन ने, गुरु जी से।
(ग) युधिष्ठिर ने, गुरु जी से। (घ) गुरुजी ने, युधिष्ठिर से।

3. (क) ✓, (ख) ✗, (ग) ✓, (घ) ✗, (ङ) ✓, (च) ✓।

4. (क) द्रोणाचार्य ने राजकुमारों को सत्यं वद, धर्मं चर और क्रोधं मा कुरु का पाठ पढ़ाया।
(ख) दूसरे दिन राजकुमार युधिष्ठिर ने पाठ नहीं सुनाया।
(ग) गुरुजी के पूछने पर सब राजकुमारों ने पाठ याद किया।
(घ) अन्य राजकुमारों ने तो पाठ को रट लिया था, जबकि युधिष्ठिर पाठ का स्मरण कर उसे अपने व्यवहार में लाना चाहते थे।
(ङ) युधिष्ठिर ने देरी से पाठ स्मरण करने का कारण बताया कि सत्य बोलना व धर्म पर चलना तो मैं निभाता रहा, पर क्रोध न करने का अभ्यास मुझे तुरन्त नहीं हो पाया।
(च) द्रोणाचार्य के अनुसार सच्चा पाठ स्मरण करने का अर्थ है कि रटने के बजाय उसे अपने आचरण में उतारा जाए।

भाषा-बोध

5.

गुरुदेव	✓	ग्रहण	✓
क्षण	✓	विद्या	✓
आशीर्वाद	✓	स्मरण	✓
कठिनाई	✓	युधिष्ठिर	✓
आश्चर्य	✓	वत्स	✓

6. सत्य = **असत्य** धर्म = **अधर्म** स्मरण करना = **भूलना**
जाना = **आना** पहले = **बाद में** लाभ = **हानि**।

7. (क) तुम (ख) मुझे (ग) हम (घ) वह (ङ) अपना।

ज्ञान-बोध

❖ छात्र स्वयं करें। ❑

16. जगदीश चंद्र बसु

पाठ-बोध

1. (क) (i) 30 नवम्बर, 1858 (ख) (i) बंगाल में,
(ग) (ii) भगवान चंद्र बसु (घ) (ii) पेड़-पौधों में,
(ङ) (iv) इन सभी का।

2. (क) संवेदनशील (ख) वैज्ञानिक (ग) बचपन
(घ) जीवन (ङ) बेतार (च) परिश्रम
(छ) क्रेस्कोग्राफ, रेजोनेंस (ज) सूरजमुखी।

3.

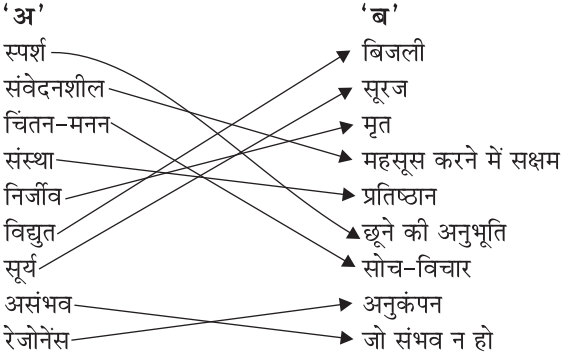

4. (क) जगदीश चंद्र बसु का जन्म, 30 नवम्बर 1858 को बंगाल में हुआ था। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा गाँव की पाठशाला में हुई।
(ख) हमारी तरह पेड़-पौधे भी संवेदनशील होते हैं, उनमें भी जीवन होता है और वह भी सुख-दु:ख का अनुभव करते हैं।
(ग) जगदीश चंद्र बसु ने सबसे पहले बेतार के तार की खोज की।
(घ) अंग्रेज सरकार ने उन्हें सर की उपाधि दी।
(ङ) क्रेस्कोग्राफ से पौधों की वृद्धि को नापा जाता है और रेजोनेंस रिकॉर्डर से यह पता चलता है कि चोट लगने पर और मरते समय पौधे काँपने लगते हैं।

भाषा-बोध

5. बेटा = **बेटी** उनका = **उनकी**
घंटा = **घंटी** तुम्हारा = **तुम्हारी**
अच्छा = **अच्छी** अपना = **अपनी**
सच्चा = **सच्ची** मेरा = **मेरी**

6. माँ! **मुझे** जगदीश चंद्र बसु की कहानी सुनाओ। **तुम्हें** तो **उनके** बारे में सब कुछ मालूम है। मेरे मित्र भी **तुमसे** यह कहानी सुनना चाहते हैं? **वे** कौन थे, **उन्हें** क्या पढ़ना अच्छा लगता था, **उन्होंने** क्या खोज की? अच्छा, आज नहीं; कल **हम** सब **तुमसे उनके** विषय में जानेंगे।

	मुझे	**तुमसे**	**उन्होंने**	**उनके**
	तुम्हें	**वे**	**हम**	
	उनके	**उन्हें**	**तुमसे**	
7.	निर्जीव	**सजीव**	शुद्ध	**अशुद्ध**
	संभव	**असंभव**	ज्ञात	**अज्ञात**
	संवेदनशील	**संवेदनहीन**	भीतरी	**बाहरी**
	प्रसिद्ध	**अप्रसिद्ध**	सच्ची	**झूठी**

ज्ञान-बोध

❖ छात्र स्वयं करें।

टायर = **चार्ल्स गुडइयर** तार = **श्रेमन मोर्स**

पेन = **लाज़लो बीरो** रेडियो = **मार्कोनी**

मोबाइल फोन = **मार्टिन कूपर**

अर्द्धवार्षिक परीक्षा प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र

1. (क) (iv) पर्वत पर चढ़ना पड़ता है। (ख) (iv) चित्रकला को
(ग) (ii) हीरा-मोती (घ) (i) गंगोत्री (ङ) (iv) 27 जून, 1880।

2. (क) असह्य (ख) संस्कृत, सख्त (ग) शीशगंज (घ) विश्वास (ङ) दर्पण।

3. (क) ✓, (ख) ✗, (ग) ✓, (घ) ✓, (ङ) ✓।

4. (क) सागर से मोती लाने के लिए सागर में गोता लगाना ही पड़ता है।
(ख) श्रवण कुमार की पितृभक्ति देखकर गाँधी जी ने सोचा कि मैं भी 'श्रवण कुमार' की तरह बनूँगा।
(ग) काँजी हाउस में भैंसें, घोड़े, घोड़ियाँ, बकरियाँ, गधे व अन्य जानवर थे।
(घ) हम नदी को सरिता, तरंगिणी, नद, तटिनी आदि नामों से पुकारते हैं।
(ङ) शिक्षक ने बेक की पिटाई इसलिए की क्योंकि वह खड़ा होकर बोला कि दर्पण मेरे हाथ से टूट गया है।

5.

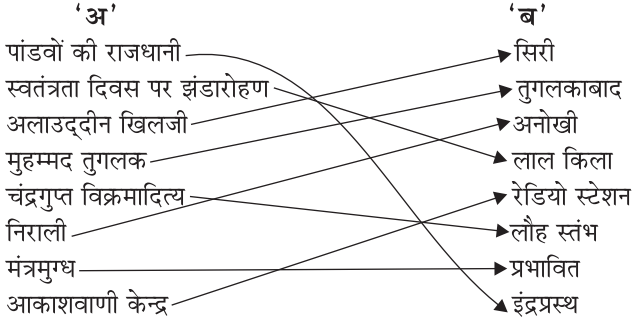

6. अवनति = **उन्नति** अपना = **पराया** शुभ = **अशुभ** प्यार = **घृणा**
मंगल = **अमंगल** सुख = **दुःख** गरीब = **अमीर** धर्म = **अधर्म**
आधार = **निराधार** ऊपर = **नीचे**।

7. चींटी ✓, उद्यम ✓, परिश्रम ✓, मंजिल ✓

वार्षिक परीक्षा प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र

1. (क) (ii) अभी (ख) (i) स्वस्थ मन तथा आत्मा का (ग) (i) महात्मा गाँधी
(घ) (ii) तक्षशिला (ङ) (iv) ये सभी।

2. (क) सरल, सादगी (ख) लुटेरा (ग) धनवती (घ) संवेदनशील
(ङ) वैज्ञानिक।

3. (क) ✗, (ख) ✗, (ग) ✗, (घ) ✓, (ङ) ✓।

4. (क) महात्मा गाँधी के पास एक मैला-कुचैला, बढ़ी हुई दाढ़ी, लाल-लाल आँखों वाला आदमी दौड़ता हुआ आया। देखने से वह लुटेरा लग रहा था और वह लुटेरा ही था।

(ख) युधिष्ठिर ने देरी से पाठ स्मरण करने का कारण बताया कि सत्य बोलना व धर्म पर चलना तो मैं निभाता रहा, पर क्रोध न करने का अभ्यास मुझे तुरन्त न हो पाया।

(ग) पापक का मन पढ़ाई में इसलिए नहीं लगता था, क्योंकि उसे अपने नाम की चिंता सताए रहती थी।

(घ) पापक घूमते समय रास्ते में जीवक, धनवती और पंथक से मिला।

(ङ) जो व्यक्ति अपने शरीर की लगातार उपेक्षा करता है, वह अपने लिए रोग, बुढ़ापा और मृत्यु के द्वार स्वयं ही खोलता है। स्वास्थ्य का प्रमुख नियम यह है कि प्रत्येक मनुष्य को व्यायाम के लिए थोड़ा-सा समय अवश्य निकालना चाहिए।

5.

'अ'	'ब'
हरीतिमा	हरियाली
शोषण	अत्याचार
अतिथि	मेहमान
शोरगुल	कोलाहल
व्यय	खर्च
व्यर्थ	बेकार

6. (क) बानी = **वाणी** (ख) सीतल = **शीतल** (ग) परलै = **प्रलय**
(घ) सुमिरन = **स्मरण** (ङ) काग = **काक** (च) व्यापत = **व्याप्त**।

7. सिंह = **शेर, महावीर** मेघ = **बादल, नीरद** प्रातः = **सुबह, सवेरा**
सूर्य = **सूरज, रवि** चन्द्र = **चाँद, रजनीश**।

❑